National Research Journal of Social Sciences
Volume-11, Issue-1, January-June 2026
PP: 776 - 798
ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

भारत में विशेष पिछड़ी जनजाति (बैगा) समाज का ऐतिहासिक परिचय

प्रतिभा जे. मिश्रा
प्रोफेसर
समाज कार्य विभाग गुरुघासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर छत्तीसगढ

अविनाश बहादुर चन्द्र दुबे
शोध छात्र
समाज कार्य विभाग, गुरुघासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर छत्तीसगढ

सारांश

बैगा जनजाति भारत की विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक प्राचीन और विशिष्ट समुदाय है, जिसका इतिहास अत्यंत समृद्ध एवं रोचक है। यह जनजाति मुख्यतः मध्य भारत के वन क्षेत्रों में निवास करती है और अपनी पारंपरिक संस्कृति एवं जीवन शैली के लिए जानी जाती है। बैगा समाज की उत्पत्ति आदिम काल से जुड़ी मानी जाती है तथा इसमें द्रविड़ियन एवं मुंडा मूल का प्रभाव देखा जाता है। 'बैगा' शब्द का ऐतिहासिक अर्थ धार्मिक एवं औषधीय ज्ञान से संबंधित है। इनकी गोदना परंपरा, बेवार कृषि और प्राकृतिक जीवन शैली उनके इतिहास को दर्शाती है। प्राचीन समय में इन्हें राजाओं द्वारा सम्मान प्राप्त था। वर्तमान में भारत सरकार ने इन्हें विशेष पिछड़ी जनजाति (PVTG) के रूप में मान्यता दी है। इस अध्ययन में बैगा समाज के ऐतिहासिक विकास और विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है।

मूल शब्द

बैगा जनजाति, ऐतिहासिक परिचय, आदिम उत्पत्ति, द्रविड़ियन, मुंडा, गोदना, बेवार कृषि, पारंपरिक संस्कृति, विशेष पिछड़ी जनजाति, वन जीवन

1. प्रस्तावना

भारत में जनजातीय समाज की एक समृद्ध परंपरा रही है, जिसमें बैगा जनजाति एक विशेष स्थान रखती है। यह जनजाति मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के वन क्षेत्रों में निवास करती है तथा अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के लिए जानी जाती है।

बैगा समाज का जीवन प्रकृति के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है और उनका इतिहास प्राचीन काल से प्रारंभ होता है। उनकी सामाजिक संरचना सरल एवं पारंपरिक है, जिसमें प्रकृति के प्रति गहरा सम्मान देखा जाता है। वर्तमान समय में बैगा जनजाति को विशेष पिछड़ी जनजाति के रूप में मान्यता प्राप्त है, जिससे उनके संरक्षण और विकास के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं।

2. प्राचीन और आदिम उत्पत्ति

बैगा जनजाति की उत्पत्ति को अत्यंत प्राचीन माना जाता है। इतिहासकारों के अनुसार यह जनजाति आदिम मानव समूहों से संबंधित है, जो प्रारंभिक काल में जंगलों में निवास करते थे।इनका जीवन पूर्णतः प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित था और वे शिकार, संग्रह एवं प्रारंभिक कृषि पर निर्भर थे। उनकी संस्कृति में प्रकृति पूजा, आत्मा और पूर्वजों की पूजा का विशेष महत्व रहा है, जो उनकी प्राचीन मान्यताओं को दर्शाता है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

3. द्रविड़ियन और मुंडा मूल का प्रभाव

बैगा जनजाति में द्रविड़ियन एवं मुंडा समूहों का सांस्कृतिक और भाषाई प्रभाव देखा जाता है।इनकी भाषा, रीति-रिवाज और परंपराएँ इन दोनों मूलों से प्रभावित हैं। द्रविड़ियन संस्कृति से इनके सामाजिक जीवन में स्थिरता और परंपरागत नियम आए, जबकि मुंडा प्रभाव से इनके जीवन में प्रकृति पूजा और सामुदायिक जीवन की झलक मिलती है।

4. 'बैगा' शब्द का ऐतिहासिक अर्थ

'बैगा' शब्द का अर्थ पारंपरिक रूप से 'वैद्य' या 'जादू-टोना करने वाला' माना जाता है।यह शब्द उन लोगों के लिए प्रयोग किया जाता था, जो औषधीय ज्ञान और धार्मिक अनुष्ठानों में दक्ष होते थे।बैगा समाज में ऐसे व्यक्तियों को विशेष सम्मान प्राप्त था, जो जड़ी-बूटियों और उपचार पद्धतियों का ज्ञान रखते थे।

5. गोदना की समृद्ध परंपरा

बैगा जनजाति में गोदना (टैटू) की परंपरा अत्यंत प्राचीन और महत्वपूर्ण है।

यह केवल सौंदर्य का प्रतीक नहीं बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान का भी प्रतीक है। महिलाओं के शरीर पर विभिन्न प्रकार के गोदना बनाए जाते हैं, जो जीवन के विभिन्न चरणों और सामाजिक स्थिति को दर्शाते हैं।

6. पारंपरिक आजीविका और 'बेवार' कृषि

बैगा जनजाति की पारंपरिक आजीविका बेवार (झूम) कृषि पर आधारित रही है।इस प्रणाली में वे जंगल की भूमि को साफ करके अस्थायी खेती करते थे। इसके अतिरिक्त वे वनोपज संग्रह, शिकार और मछली पकड़ने पर निर्भर रहते थे।यह जीवन शैली प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने का उदाहरण प्रस्तुत करती है।

7. राजाओं के समय का सम्मान

प्राचीन समय में बैगा जनजाति को राजाओं और स्थानीय शासकों द्वारा सम्मान प्राप्त था। उन्हें जंगलों के संरक्षक और औषधीय ज्ञान के विशेषज्ञ के रूप में माना जाता था। राजा लोग उनसे परामर्श लेते थे और उन्हें विशेष अधिकार प्रदान करते थे।

8. भारत सरकार द्वारा 'विशेष पिछड़ी जनजाति' का दर्जा

भारत सरकार ने बैगा जनजाति को विशेष पिछड़ी जनजाति (PVTG) के रूप में वर्गीकृत किया है। इसका उद्देश्य उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार करना है। सरकार द्वारा उनके विकास के लिए विशेष योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार संबंधी कार्यक्रम।

9. सुझाव एवं निष्कर्ष

निष्कर्षतः बैगा जनजाति का इतिहास अत्यंत समृद्ध और प्राचीन है, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान को दर्शाता है। उनकी परंपराएँ, जीवन शैली और सामाजिक संरचना उन्हें अन्य जनजातियों से अलग बनाती हैं। आवश्यक है कि उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण किया जाए। सरकार को चाहिए कि उनके विकास के लिए प्रभावी योजनाएँ लागू करे और उन्हें मुख्यधारा से जोड़े। यदि उचित प्रयास किए जाएँ तो बैगा जनजाति का समग्र विकास संभव है।

संदर्भ सूची

1. Sharma, B.C. (1976-77): "Tribal Hexagon-A study in Tribal Demography." Geographical outlook 12.
2. Singh, B.N. (1997). Educational Technology its concept and importance in saryerpar Bhoogol Patriks Basti.

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

3. Singh, K. Suresh (ed) (1972): "Tribal Situation in India, : Indian Institute of Advanced Study Simala.
4. Singh, K.N. & Singh R.S. (1984): "Level of Regional Tribal Development in Tribal Areas: Are they indentical? The National Journal of India, Vol. 30 Part I.
5. Taher, M. (1977): "Tribes of North East India- A diognosistic Survey in spatial pattern." The Journal of North East India Geographical Society, Vol.-9, No. 122.
6. Verma R.S.P. (1975): "Mundas in Changing Environment, Indian Geographical Studies" V, 50-55.
7. Warrier, A. - The Baiga (1939) Oxford Univ. Press London.
8. एल्विन वी. (1939) द बैगा, जॉन मुर्रे, लन्दन
9. चौहान हरिमोहन सिंह (1987) "मोटसा जनजाति: एक मानव वैज्ञानिक अध्ययन" मानव, 15:2,3 पृष्ठ 113-118
10. जोशी भास्कर प्रकाश (1981) "उत्तरी पश्चिमी हिमालय के आदिवासी भोटिया समाज में विवाह", मानव 9:4 पृष्ठ 168-171
11. तिवारी, सी.पी. (2003) जनजातीय पर्यावरण, आशा प्रकाशन, आगरा.
12. तिवारी शिवकुमार (1994) मध्यप्रदेश की जनजातियाँ- समाज एवं व्यवस्था, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
13. निरगुणे वी. (1985) आदिम पुराकथायें
14. प्रो. गुप्ता, एम. सी. तथा शर्मा, डी.डी. समाजशास्त्र, पृष्ठ 398 साहित्य भवन पब्लिकेशन
15. मजूमदार, डी० एन० (1989) भारतीय जनसंस्कृति, अपाला प्रकाशन, लखनऊ

© Copyright @ Authors